शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भीष्म साहनी के उपन्यासों में आर्थिक जीवन दर्शन

डॉ.दिलीप कुमार झा
फोर्ट ग्लास्टर विद्यालय
हावड़ा, प.बंगाल, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी उपन्यास साहित्य में भीष्म साहनी का स्थान विशिष्ट है। वे शोषित, पीड़ित लोगों के पक्षधर हैं। उन्होंने सात उपन्यासों की रचना कर हिन्दी उपन्यास साहित्य की श्रीवृद्धि की है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में वे अपना विशिष्ट मत रखते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके उपन्यासों में आर्थिक जीवन दर्शन पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

"भीष्म साहनी बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति हैं। इसका असर भी उनके साहित्य में देखने को मिलता है। उनके इस सरल और सौम्य व्यक्तित्व के लिए ही उन पर मार्क्सवाद उस रूप में हावी नहीं है, जैसा अन्य वामपंथी लेखकों में देखने को मिलता है।"1

समाजिक जीवन का रूप आर्थिक व्यवस्था पर आधारित है। "समाज में लोगों की प्रथाओं, भावनाओं, दृष्टिकोणों, आकांक्षाओं, नैतिक मान्यताओं और आदर्शों की समष्टि को युग की मनोवृत्ति कहते हैं और जो सभी विचारधाराओं की मूलस्रोत भी है। प्रत्येक युग की अपनी मनोवृत्ति होती है जो समाज के आर्थिक तत्वों के अनुरूप होती है। समाज का आर्थिक आधार लोगों को सभी प्रकार से प्रभावित करता है। इस प्रकार युग की मनोवृत्ति हमेशा ही अंततः आर्थिक व्यवस्था द्वारा निर्धारित होती है। इसलिए किसी भी लेखक की नैतिक मान्यताएं और आदतें, युग की मनोवृत्ति आदि उसकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती है। वे निश्चित रूप से आर्थिक व्यवस्था से प्रभावित और निर्धारित होती हैं।"2

आर्थिक जीवन और मार्क्सवाद

जब जीवन का विवेचन-विश्लेषण आर्थिक दृष्टि से किया जाता है, तब उसे आर्थिक जीवन दर्शन कहते हैं। भीष्म साहनी के उपन्यासों में अभिव्यक्त आर्थिक जीवन दर्शन को समझने के लिए मार्क्सवाद को समझना आवश्यक है।

कार्लमार्क्स जर्मन दार्शनिक, अर्थशास्त्री एवं वैज्ञानिक समाजवाद के प्रणेता थे। फ्रेडरिक एंगेल्स ने कार्लमार्क्स द्वारा प्रतिपादित सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक सिद्धांत को वैज्ञानिक समाजवाद का नाम दिया। मार्क्स को वैज्ञानिक समाजवाद का प्रणेता माना जाता है। 'दास केपिटल' की रचना कार्लमार्क्स ने 1867 में की थी। इसमें पूंजी तथा पूंजीवाद का विश्लेषण है। मजदूर वर्ग को शोषण से मुक्त करने के उपाय बताए गए हैं। इस पुस्तक के द्वारा एक नवीन विचारधारा प्रवाहित हुई जिसने संपूर्ण प्राचीन मान्यताओं को झकझोर कर रख दिया। इस पुस्तक के प्रकाशन के कुछ ही वर्षों बाद रूस में साम्यवादी क्रांति हुई। 'दास केपिटल' मार्क्स के जीवनकाल में प्रकाशित किया गया था, लेकिन मार्क्स की मृत्यु (1883) होने के बाद

द्वितीय और तृतीय खंड का संपादन मार्क्स के दोस्त एवं सहयोगी फ्रेडरिक एंगेल्स ने किया।

कार्लमार्क्स के विचारों ने दुनिया की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। सन् 1848 में मार्क्स ने 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' जारी किया, जिसमें अर्थव्यवस्था संबंधी मान्यताएं स्पष्ट प्रतिबिंबित होती हैं। उनका 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत', 'अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत' और वर्गसंघर्ष की अवधारणा ने शोषितों और पीड़ितों में नवीन चेतना का संचार किया। डॉ.रामदरश मिश्र के शब्दों में "अभी तक का सारा इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास रहा है। आधुनिक पूंजीवादी समाज सामंती समाज के ध्वंस से पैदा हुआ है। आज समूचा समाज दो विशाल शिविरों, दो विरोधी वर्गों - पूंजीपति एवं सर्वहारा में बंटता जा रहा है। पूंजीपति वर्ग श्रम का मालिक है और सर्वहारा के पास उत्पादन का कोई साधन नहीं होता। वह जिंदाभर रहने के लिए अपनी श्रमशक्ति बेचने के लिए विवश होता है। मजदूर वर्ग अपने को अलग-अलग बेचने को तैयार हैं। वे व्यापारिक माल की तरह खुद भी माल हैं। मजदूर समूचे पूंजीपति वर्ग एवं पूंजीवादी राज्य के गुलाम हैं।"3

इसके आगे वे जोड़ते हैं, '"बुर्जुआ से मतलब आधुनिक पूंजीपति वर्ग अर्थात् सामाजिक उत्पादन के साधनों के स्वामी। सर्वहारा से मतलब आधुनिक उजरती मजदूरों से है, जिनके पास उत्पादन का अपना कोई साधन नहीं है। श्रमजीवियों का कोई देश नहीं है। सर्वहारा वर्ग को सबसे पहले राजनीतिक प्रभुत्व प्राप्त करना होगा। अपने को राष्ट्र के रूप में गठित करना होगा।"4

मार्क्स ने विश्व के सामने एक क्रांतिकारी विचार रखा। उन्होंने सारे संबंधों के मूल में अर्थ को ही सब कुछ माना। उनके विचारों ने एक ओर तो राजनीतिक व्यवस्था पर प्रहार किया तो दूसरी ओर बंधी-बंधायी लीक पर चलने वाले साहित्य की परंपरागत भावभूमि पर भी चोट की। साहित्य में उपन्यास विधा का जन्म पूंजीवादी व्यवस्था की देन है। मार्क्स की विचारधारा पर आधारित साहित्य को 'प्रगतिवादी साहित्य' संज्ञा से अभिहित किया गया। प्रगतिवादी उपन्यासकारों ने आर्थिक पहलू को विशेष महत्व दिया। आर्थिक साधनों के बदलने से समाज के संबंध भी बदल जाते हैं और समाज के संबंधों के बदलने से समाज की सभ्यता, संस्कृति, कला, साहित्य में नवीनता आती है। समाजवादी उपन्यासकारों ने इसी दृष्टिकोण से समाज के यथार्थ को चित्रित किया है। "समाजवादी उपन्यासों में सदैव सामान्य पिसी हुई जनता और जीवन की नवीन शक्तियों के प्रति सहानुभूति तथा उन्हें स्थापित करने का भाव तथा परोपजीवी, असंगतियों से ग्रस्त, झूठी शान से गर्वीले लोगों और सड़ी-गली प्राचीन जिंदगी के ठेकेदारों के प्रति कठोर आक्रोश दिखाई पड़ता है। प्रगतिवादी उपन्यासकारों ने किसान, मजदूर और मध्यवर्ग से अपनी कहानी चुनी। इन प्रगतिवादी उपन्यासकारों में आप इनके प्रति उपन्यासकारों की सहानुभूति अवश्य पाएंगे, किंतु वास्तव में उपन्यास इन पात्रों की पूरी जिंदगी की वास्तविकताओं को उनके समूचे आर्थिक और सामाजिक परिवेश के साथ उद्घाटित करते चले हैं।"5

"मार्क्सवादी दृष्टि बुनियादी सत्य को देखती है। बुनियादी सत्य क्या है ? प्रत्येक युग में और पदार्थ में दो शक्तियों का द्वंद्व चलता रहता है - मरणोन्मुखी पुरानी शक्तियों और नवीन जीवंत शक्तियों का। सामाजिक स्तर पर पुरानी शक्तियों में शोषक लोग होते हैं और नवीन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शक्तियों में शोषित, गरीब, किसान-मजदूर होते हैं। नवीन जीवंत शक्तियां पुरानी शक्तियों को नष्ट कर एक नवीन जनमंगलकारी समाज की स्थापना की कोशिश करती हैं।"6

भीष्म साहनी के उपन्यासों में आर्थिक जीवन दर्शन

इन विचारों के परिप्रेक्ष्य में भीष्म साहनी के उपन्यासों में आर्थिक जीवन दर्शन के विविध पहलु उभरकर सामने आते हैं। आजादी के बाद भारत विकास के पथ पर अग्रसर हुआ। लोगों में नया उल्लास और उमंग थी। वे देश निर्माण में अपना भरपूर योगदान देने लगे। एक ओर तो चमकदार भारत का निर्माण हो रहा था, तो दूसरी ओर विपन्नता भी पसरी हुई थी। जैसे-जैसे भारत आगे बढ़ता गया, वैसे-वैसे आर्थिक विषमता भी बढ़ती चली गई। भारत में वैसी वर्गसंघर्ष की स्थितियां निर्मित नहीं हुई, जैसी रूस में हुई थीं, परंतु अमीर और गरीब के बीच की खाई चैड़ी होती गई। साहित्यकारों से यह बात छिप नहीं पायी और उन्होंने अपने उपन्यासों में इसका यथार्थ चित्रण किया।

वर्ग विषमता

धन की महत्ता मानव जीवन में स्वयं सिद्ध है। आर्थिक मजबूरी के सामने आदमी अनैतिक कार्य करने पर विवश हो जाता है। 'तमस' उपन्यास में नत्थू की असहाय अवस्था में आर्थिक विवशता की दुर्गंध आती है। तभी तो न चाहते हुए भी वह सूअर मारने तैयार हो जाता है। क्योंकि "मुरादअली से रोज काम पड़ता था, नत्थू इनकार कैसे कर देता। शहर में कोई घोड़ा मरता, गाय या भैंस मरती तो मुराद अली खाल दिलवा दिया करता था। अठन्नी-रुपया मुराद अली को भी देना पड़ता था, मगर खाल मिल जाती थी।"7

गरीबी दुनिया का सबसे बड़ा अभिशाप हैं नत्थू जानवर की मरी लाश से चमड़ा निकालकर अपना गुजर-बसर करता था। उच्च वर्ग के व्यक्ति ऐसे वातावरण में बिलकुल नहीं रहते। उनकी भव्य कोठियां हैं। ऐशोआराम के लिए ढेरों दौलत है। जितने खर्चे में मजदूर वर्ग पूरे महीने रहने का खर्च चलाता है, शायद उतना ही खर्च उच्च वर्ग के सिगरेट और शराब के लिए एक बैठक के लिए पर्याप्त नहीं होता। 'तमस' के रिचर्ड, लीजा, शाहनवाज, लाल लक्ष्मीनारायण, रघुनाथ इसी श्रेणी के प्रतीक हैं।

मय्यादास की माढ़ी में दीवान धनपत का ठाट किसी से छिपा नहीं है। दीवान धनपत लंबे-चैड़े पलंग पर, जिसमें हाथी दांत के बढ़िया पाए लगे थे, लेटा करता। वह अपने नौकरों को भी विलायती साबुन हाथ धोने के लिए देता है -

"किससे हाथ धोए थे ?"

"मिट्टी से मालिक।"

"उल्लू के पट्ठे! मैंने कहा था जो है कि विलायती साबुन से हाथ धोया करो।"

"मालिक!"8

दीवान धनपत, हुकूमत राय जैसे रईसों की तुलना में निम्न और निम्नमध्यवर्ग की स्थिति बड़ी दयनीय है। किन परिस्थितियों में भागसुद्धी रह रही थी, उसका चित्र प्रस्तुत है, "तब से भागसुद्धी और नागराज दोनों इसी कोठरी में रहने लगे थे।"9 ऊपर टूटी छत की चिंता, नीचे काले फनिचर, नागराज का भय, दोनों ने मिलकर भागसुद्धी को निडर बना दिया था।

आर्थिक विपन्नता

भीष्म साहनी के उपन्यासों में निम्न मध्यवर्ग और निम्न वर्गों की आर्थिक विपन्नता के अनेक वास्तविक चित्रों के दर्शन होते हैं। 'बसंती' उपन्यास में उन्होंने निम्नवर्गीय मजदूरों के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जीवन चरित्र को उभारा है। इनकी आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय है और ऐसे लोगों की बस्ती ही उनकी आर्थिक विपन्नता का जीता जागता उदाहरण है। इस बस्ती का एक चित्र देखिए, "अनेक स्त्रियां कंधें पर से बड़े-बड़े झोले लटकाए संतनगर की सड़कों पर फटे कागज, कांच के टुकड़े, खाली डिब्बे, झपट-झपटकर बटोरती फिरती थीं। और छोटे-छोटे बच्चे कचरे के ढेरों में कुछ न कुछ ढूंढते-बीनते रहते, खाली बोतलें, अध टूटे प्याले। ऐसे ही लोग खोखों में रहते थे। कहीं पर बरडू रहता था और कहीं पर बसंती और दीनू भी रहने लगे थे।"10

समाजवादी उपन्यासों में शोषितों और शोषकों के संघर्ष का चित्रण बहुत अधिक हुआ है। स्वतंत्रता के पहले तथा बाद के भारतीय समाज में शोषित-शोषक संघर्ष के दो विशिष्ट पहलू रहे हैं - किसान-जमींदार संघर्ष ओर मजदूर-पूंजीपति संघर्ष। भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में मजदूर-पूंजीपति का संघर्ष चित्रित किया है, किंतु यह संघर्ष नारेबाजी और जुलूस से हटकर एक नये तरह का संघर्ष है। 'झरोखे' का तुलसी, 'तमस' का नत्थू, 'बसंती' उपन्यास की बसंती अपने वर्ग की पीड़ा झेलते-झेलते जिंदगी के प्रति अडिग आस्था लिए संघर्ष पथ पर बढ़ते दिखाई देते हैं।

स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता

भीष्म साहनी के उपन्यासों में समकालीन युग प्रतिबिंबित हो उठा है। उन पर मार्क्सवाद का प्रभाव होने के कारण जीवन में आर्थिक समानता को अनिवार्य मानते हैं और नारी की आत्मनिर्भरता में विश्वास व्यक्त करते हैं। 'बसंती' उपन्यास में निम्नवर्गीय मजदूरों का चित्रण किया गया है। उच्च वर्ग तो धन के बल पर ऐश करता है, जबकि निम्नवर्गीय स्त्रियां छोटा-मोटा काम करके अपने जीवन को सुखी बनाना चाहती हैं। 'बसंती' उपन्यास में वर्णित रमेशनगर की अधिकांश स्त्रियां निम्नवर्ग की हैं। "युवतियों और स्त्रियों की टोलियां, कभी पैदल चलकर तो कभी किसी बस या टेंपो की सवारी करके फिर रमेशनगर के घरों में चौका-बर्तन करने पहुंचने लगीं।'11 बंसती स्वयं रमेशनगर में चैका-बर्तन करती है। "अब चलूंगी बीबीजी, पांच नंबर वाली बीबी जाग गई होंगी, वहां बर्तन करूंगी।"12 बंसती जिसे अपनी कमाई पर नाज है, सारे सामंती और पूंजीवादी मूल्यों और संस्कारों पर साहस के साथ प्रहार करती है। भीष्म साहनी ने उसे स्वतंत्रत विचारों की युवती के रूप में चित्रित किया है।

भीष्म साहनी के 'कड़ियां' उपन्यास में सुषमा भी एक आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में हमारे सामने उपस्थित होती है। उसके पिता लकवाग्रस्त है। घर में कोई कमाने वाला नहीं है। अतः वह शादी नहीं करती है। वह अपने पिता के इलाज के लिए पैसे भेजती है। प्रमिला द्वारा पूछे जाने पर वह कहती है, "मैं कैशियर का काम करती हूं।'13 यह कथन सुषमा की आत्मनिर्भरता की ओर संकेत करता है। 'कुंतो' उपन्यास में सुषमा अपनी मां को पत्र लिखती है, "कभी मुझमें सामर्थ्य हुई तो मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूंगी और मैं तुम्हारी सेवा कर तुम्हारे जीवनभर की थकान दूर कर दूंगी।'14 भीष्म साहनी के उपन्यासों में विपन्न नारियां आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए संघर्ष करती हैं और आगे बढ़ने की कोशिश करती हैं। वे शोषण से मुक्ति के लिए भी प्रयत्नशील हैं।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी ने सामाजिक संबंधों की व्याख्या आर्थिक दृष्टि से की है। उन्होंने निम्न मध्यवर्ग और निम्न वर्ग की विषम आर्थिक स्थिति को

अपने उपन्यासों का विषय बनाया है। उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। भीष्म साहनी ने नारी की दयनीय स्थिति का कारण आर्थिक परतंत्रता को बताया है। इससे मुक्ति के लिए नारी को आत्मनिर्भर होना जरूरी है। उनकी आर्थिक चेतना भारतीय वातावरण में पल्लवित-पुष्पित होने से व्यावहारिक है। उन्होंने देश की स्थिति को खुली आंखों से देखा है और उसका यथार्थ चित्रण किया है। भीष्म साहनी अपने एक साक्षात्कार में कहते हैं, "तो वह समाजवादी दृष्टिकोण है, वह इस दृष्टि से आज भी संगत है कि देश के गरीब लोगों की जो न्यायसंगत मांगे हैं, उनको न ठुकराया जाए, चाहे आप जैसी भी व्यवस्था कर लें। यह नहीं कि पूंजी तो बढ़ती जाए और धनी वर्ग और धनी हो जाए और पिछड़े हुए वर्ग की तरफ कोई ध्यान तक देने की जरूरत ही नहीं समझे।"15 भीष्म साहनी की सहानुभूति सर्वहारा वर्ग के प्रति सदैव बनी रही।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 सारिका, विष्णुप्रभाकर, वर्ष 1990, पृष्ठ 44

2 नागार्जुन का कथा साहित्य, डॉ.तेजसिंह पृष्ठ 9

3 कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो, कार्लमार्क्स एवं फ्रेडरिक एंगेल्स 1848, पृष्ठ 9

4 वही

5 हिन्दी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, तीसरा परिवर्द्धित संस्करण, 2001, पृष्ठ 130-131

6 वही, पृष्ठ 128

7 तमस, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973, प्रयुक्त संस्करण 1975, पृष्ठ 11

8 मय्यादास की माढ़ी, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रयुक्त संस्करण 1995, पृष्ठ 279

9 वही, पृष्ठ 279

10 बसंती, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1995, पृष्ठ 95

11 वही, पृष्ठ 43

12 वही पृष्ठ 41

13 कड़ियां, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1989, पृष्ठ 63

14 कुंतो भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1997, पृष्ठ 278

15 पल-प्रतिपल, भीष्म साहनी ओर राजकुमार राकेश की बातचीत के अंश, पत्रिका 9, पृष्ठ 52